केंद्रीय विद्यालय संगठन ,एरणाकुलम क्षेत्र

द्वितीय पूर्व बोर्ड परीक्षा - 2018-19

हिन्दी (केंद्रिक)

कक्षा :- 12 अधिकतम
अंक : 80

निर्धारित
समय : 3 घंटे

- कृपया जांच कर ले कि इस प्रश्न पत्र में 14 प्रश्न हैं ।
- इस प्रश्नपत्र की तीन खंड हैं - क , ख और ग ।
- तीनों खड़ों के प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है ।

खण्ड - क

प्र 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 12

आत्मविश्वासी मनुष्य का लक्ष्य केन्द्रित होता है - उसका ध्यान अर्जुन की तरह, साधना एकलव्य की तरह और निर्भीकता कर्ण की तरह होती हैं । मनुष्य को सदैव इस मंत्र का जाप करना चाहिए कि मैं कुछ भी कर सकता हूँ । यदि हमें प्रगति करनी है तो ' आत्म दीपो भव ' के सिद्धांत को स्वीकारना होगा अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो । ' अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काज ' की भावना रखने वालों को जानना चाहिए कि भाग्यवादिता और आलस्य ऐसे दुर्गुण हैं, जो व्यक्ति को थोथा चना बना देते हैं । यह तो स्वयं हमें सोचना है कि हमें कुलदीपक बनना है, जो लोग सदैव अवसर की प्रतीक्षा करते रहते हैं, अवसर उनके पास से होकर निकल भी जाता है, फिर भी वे उसकी दस्तक को नहीं पहचानते । ऐसे भाग्यवादियों से तो राम ही बचाए । साहस और मज़बूत विचार शक्ति मनुष्य को सफलता दिलाती है और कायरता तथा हिचक मनुष्य को असफलता की और धकेल देती है । अतः उठो, अपने कर्म में रत् हो जाओ, अकर्मण्यता को त्याग दो, हम अपना भविष्य बना सकते हैं । आवश्यकता है कि अपना लक्ष्य तय करके पूर्ण संयम, निष्ठा, कर्मण्यता और दृढ़ता के साथ आगे बढ़े । हमें दृढ़ता का संकल्प लेना होगा । उपयोगी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करना होगा । सुख - सुविधाओं का त्याग करना पड़ेगा । हमें सफलता प्राप्त करने से पहले युद्ध से गुज़रना पड़ता है । सफलता कभी भी भाग्य और घटनाओं का विषय नहीं होती, बल्कि यह सशक्त विचार शक्ति और कठिन परिश्रम पर निर्भर रहती है । इसलिए हमें जीवन में लक्ष्य के प्रति आशान्वित होना चाहिए और सही निर्णय करना चाहिए । यह व्यक्ति की चारित्रिक दृढ़ता को भी दिखाता है । हमारी सोचने की शक्ति, आदत, सहनशीलता, कार्यशक्ति तथा साहस सभी कुछ हमारी कर्त्तव्यपरायणता से लक्षित होते हैं , जो अपनी इंद्रियों को जीते, उसे जितेंद्रिय कहते हैं और जो सफलता प्राप्त करे, उसे विजयी कहते हैं ।

क) आत्मविश्वासी मनुष्य को किस प्रकार होना चाहिए ? 2
ख) भाग्यवादी मनुष्य सफल क्यों नहीं हो पाते ? 2

ग) गद्यांश के अनुसार सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्ति की पहचान क्या होती है ? 2

घ) किन-किन जीवन मूल्यों के आधार पर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं ? 2

ङ) " आत्म दीपो भव " का सिद्धान्त क्या है ?
2

च) सफलता किस पर निर्भर रहती है ?
1

छ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए । 1

प्र 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 1*4 =4

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये , क्या विद्युत - घन के नर्तन ,

मुझे न साथी रोक सकेंगे , सागर के गर्जन - तर्जन ।

मैं अविराम पथिक अलबेला, रुके न मेरे कभी चरण ,

शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन ।

फिर मुझको क्यों रोक सकेंगे जीवन के उत्थान - पतन ।

मैं अटका कब , कब विचलित मैं , सतत् डगर मेरी संबल ,

रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल

आँधी हो , ओले - वर्षा हों , राह सुपरिचित है मेरी ,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे , ये जग के खंडन - मंडन ।

मुझे डरा पाए, कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन ।

मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन - मन मेँ उन्माद लिए ,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे , ये बादल - विद्युत नर्तन ।

क) काव्यांश मेँ आए, 'विद्युत घन नर्तन', 'सागर की गर्जना', और 'ज्वालामुखी' किसके प्रतीक है ? 1

ख) "मैं विपदाओं मेँ मुसकाता नव आशा के दीप लिए " - पंक्तियों मेँ निहित भाव क्या है ?
1

ग) कवि अपने आसपास की परिस्थितियों से क्यों नहीं डरता है ?
1

घ) " शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन " - इस पंक्ति मेँ प्रयुक्त 'शूल' और 'फूल' किस की और इशारा कर रहे हैं ?
1

अथवा

नया साल आया , चलो मुस्कुराएँ

जटिल ज़िन्दगी को सरल कुछ बनाएँ

सूने हृदय में भी झनकार भर दे

नया गीत कोई सहज गुनगुनाएँ I

तिमिर रोष है , हम कहीं घिर न जाएँ

जिसे दूर छोड़ा , वही फिर न आएँ

अभी तक कहीं हम बिखरे हुए हैं ,

सवेरे का सूरज मिलकर उगाएँ ।

जहाँ बन गई दूरियाँ , कुछ घटाएँ ,

अकेले खड़ा जो , उसे संग लाएँ ,

अभी कितनी बातों में उलझे हुए हैं ,

नई सोच से हम नया हल सुझाएँ ।

करें शास्त्र श्यामल धरा को घटाएँ ,

बिखराएँ खुशबू वतन की हवाएँ ,

बनाकर यहाँ पर भरोसा का मौसम

बंजर भूमि पर अब नया हल चलाएँ I

क) कवि के मुस्कुराने के कारणों को स्पष्ट कीजिए । 1

ख) कवि को किससे घिरने का भय है ? 1

ग) दूरियों को कम करने की बात क्यों की गई है ? 1

घ) ' बनाकर यहाँ पर भरोसा का मौसम ' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । 1

खण्ड – ख

प्र.3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध/अनुच्छेद लिखिए – 5

क) शिक्षित युवा वर्ग में बढ़ती बेरोज़गारी

ख) सांप्रदायिकता : देश का अभिशाप

ग) मैदानों से वंचित बचपन

घ) बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता ।

प्र.4 एक सचेत नागरिक होने के नाते राज्य की कानून व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के सचिव को पत्र लिखिए ।
5

अथवा

बाढ़ संकट से संबन्धित राहत कार्य में हो रही देरी की सूचना देते हुए आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारी को पत्र लिखिए ।

प्र.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए ।
1*4=4

क) फ्री लांसर पत्रकार से आप क्या समझते हैं ?
1

ख) स्तंभ लेखन माने क्या है ?
1

ग) ' प्रिंट माध्यम ' से क्या तात्पर्य है ?
1

घ) जनसंचार माध्यम किसे कहते हैं ?
1

प्र.6 ' धर्म की आड़ में व्याप्त भ्रष्टाचार ' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए ।
3

अथवा

हाल ही में पढ़ी किसी एक मनोरंजक पुस्तक की समीक्षा तैयार कीजिए ।

प्र.7 "जंगलों से गुम होती चहचहाहट" या "फुटपाथ पर सोते लोग" विषय पर एक फ़ीचर लिखिए ।
3

प्र.8 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
2*3=6

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।

काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहु की जाति बिगार न सोऊ ।।

तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सौ कहै कछु ओऊ ।

माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकू न दैबको दोऊ ।।

क) तुलसीदास अपना जीवन – निर्वाह कैसे करना चाहते हैं ? 2

ख) राम के साथ अपने संबंध को कवि ने किस प्रकार व्यक्त किया है ? 2

ग) समाज के प्रति क्षोभ कवि ने किन शब्दों में व्यक्त किया है ? 2

अथवा

पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे हैं

अपने रंध्रों के सहारे

अगर वे कभी गिरते हैं छतों के

खतरनाक किनारों से

और बच जाते हैं तब तो

और भी निडर होकर सुनहले सूरज के

सामने आते हैं पृथ्वी और भी तेज़

धूमती हुई आती है

उनके बेचैन पैरों के पास ।

क) पतंगों के सहारे उड़ने का क्या आशय है ? 2

ख) गिरकर बचने पर बच्चों में क्या प्रतिक्रिया होती है ? 2

ग) पैरों को बेचैन क्यों कहा गया है ? 2

प्र.9 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 2*2=4

नहला के छलके – छलके निर्मल जल से

उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके

किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को

जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

क) काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । 2

ख) काव्यांश के शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ।
2

अथवा

कजरारे बदलों की छाई नभ छाया

तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया ।

हौले – हौले जाती मुझे बाँध निज माया से ।

उसे कोई तनिक रोक रक्खो ।

क) काव्यांश में प्रयुक्त अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों के एक – एक उदाहरण चुनकर लिखिए ।
2

ख) काव्यांश के भाषा सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ।
2

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए ।
3*2=6

क) " जहाँ पर दाना रहते हैं , वहीं नादान भी होते हैं " – कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3

ख) रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है ? ' छोटा मेरा खेत ' पाठ के संदर्भ में उत्तर दीजिए ?
3

ग) " हम समर्थ शक्तिवान " और " हम एक दुर्बल को लाएँगे " – पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?
3

प्र.11 निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 3*2 = 6

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा , जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था । रोने पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया । बहुत दिन से नैहर नहीं गई , सो जाकर देख आवे , यही कहकर और पहना उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया । इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरो में जो पंख लगा दिए थे , वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए ।

क) विमाता ने भक्तिन को उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से क्यों भेजा ? 2

ख) भक्तिन के प्रति सास का अप्रत्याशित अनुग्रह क्या था ? 2

ग) ' पैरो में लगे पंख ' – को गद्यांश के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।
2

अथवा

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा – सा उपाय है । वह यह कि बाज़ार जाओ तो खाली मन न हो । मन ख़ाली हो, तब बाज़ार न जाओ । कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए । पानी भीतर हो , लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है । मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला – का फैला ही रह जाएगा । तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा ,बल्कि कुछ आनंद ही देगा । तब बाज़ार तुमसे कृतार्थ होगा , क्योंकि तुम कुछ – न – कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे । बाज़ार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना ।

क) बाज़ार की असली कृतार्थता किसमें है ? उसके लिए ग्राहक को क्या करना चाहिए ?
2

ख) बाज़ार रूपी जादू की जकड़ से बचने का उपाय क्या है ?
2

ग) मन में लक्ष्य भरा हो तो बाज़ार किस प्रकार दिखाई देगा ?
2

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 3*3 + 1*1 = 10

क) ' चार्ली चैप्लिन की फिल्में भावनाओं पर टिकी हुई है , बुद्धि पर नहीं । ' इस कथन को उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए ।
3

ख) " मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती " - नमक कहानी के आधार पर उदाहरणों के ज़रिये प्रस्तुत पंक्ति की पुष्टि करें ।
3

ग) जाति - प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉ. आंबेड़कर के क्या तर्क हैं ? 3

घ) शिरीष को अवधूत क्यों कहा गया है ?
1

प्र.13 निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए । 4*1=4

क) " काश , कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता । अफ़सोस ,ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला ....। " क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है ?
4

ख) " आधुनिकता का अंधानुकरण सभ्य एवं संस्कृत समाज के निर्माण में एक बाधक तत्व है " - इस कथन पर अपना विचार व्यक्त कीजिए । (सिल्वर वैडिंग पाठ के आधार पर) ? 4

प्र.14 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 4*2=8

क) मुअनजोदडो की सभ्यता पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी - कैसे ? 4

ख) " यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलनेवाली एक आवाज़ है । एक ऐसी आवाज़ , जो किसी संत या कवि की नहीं , बल्कि एक साधारण लड़की की है । " इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रेंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें ।
4

ग) सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य - बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था । ऐसा क्यों कहा गया ?
4